बाइबल टीचर

वर्ष 16 मार्च 2019 अंक 4

सम्पादकीय

वे सांपों को उठा लेंगे और यदि वे ज़हर भी पी जाए तो उनकी कुछ हानि नहीं होगी

कुछ वर्ष पहिले अमरीका में एक बहुत भयानक घटना घटी थी और इसके विषय में मैं आपको बताना चाहता हूं। जहां यह बाइबल की सभा हो रही थी वहां के प्रचारक को यदि सच्चाई का ज्ञान होता तो वह शायद ऐसी हरकत कभी न करता। कई बार हम कई बातों से अंजान रहते हैं तथा हमें उसका परिणाम भुगतान पड़ता है। परमेश्वर चाहता है कि हम सब सत्य को जानें। (यूहन्ना 8:30-32; 1 कुरि. 10:1, 2 तीमु. 2:15) समाचार में यह बताया गया था कि एक बहुत दुखद घटना घटी है, जिसमें एक प्रचारक ने बाइबल सभा में एक जहरीले सांप को हाथ में रखकर प्रचार किया और उसका विश्वास था कि यह सांप उसे काटेगा नहीं। प्रचार करते हुए सांप ने उस प्रचारक को काट लिया। लोगों ने उसे अस्पताल ले जाना चाहा पर उसने किसी की बात नहीं मानी तथा कुछ ही देर में उसकी मृत्यु हो गई। यह प्रचारक अपने को अपोस्टल कहता था तथा ''एपोस्टेलिक चर्च ऑफ गाड'' में प्रचार कर रहा था। कई लोगों में जोश तो बहुत होता है परन्तु ज्ञान नहीं होता। (रोमियों 10:1-4)। आज बहुत से लोग ऐसा दावा करते हैं कि वे सांपों को उठा लेंगे या जहर पी लेगें तो उन्हें कुछ नहीं होगा। यह एक ऐसा विश्वास है जो उन्हें बचा नहीं सकता। (1 कुरि. 12:1; 8-10, 13:8-13)

यीशु ने अपने अपॉस्टल या प्रेरितों को चुना था, तथा उन्हें सामर्थ दी थी ताकि वे आश्चर्यक्रमों को करें तथा उन्हें सांपों से और जहर पीने से कोई नुकसान नहीं होगा। परन्तु आज जो लोग यह दावा करते हैं कि वे प्रेरित हैं उनमें से कोई भी एक ज़हरीले कोबरा सांप को अपने हाथ से नहीं पकड़ेगा। आज हमारे बीच में अपोस्टल तथा प्रोफेट नहीं है। बहुत से प्रचारक पौलुस की तरह सोचते हैं कि हम गलत काम करके भी सही कर रहे हैं। पौलुस ने भी यह सोचा था कि मसीहीयों को सताकर वह अच्छा काम कर रहा है। (प्रेरितों 23:1. 26:9-11)।

यदि कोई कहे कि मैं एक अपोस्टल हूं और चूहे मारने की दवाई को पीले तो उसका क्या परिणाम होगा? मै जानता हूं कि आपका मन साफ़ है और आप बहुत धार्मिक हैं, परन्तु कभी इतने जोश में न आये कि आपके होश उड़ जाये।

अमरीका के इस प्रचारक ने ज़हर भी पिया तथा सांप को भी हाथों से हैंडल किया यह सोचकर कि परमेश्वर उसे बचा लेगा। यह एक मूर्खतापूर्ण कार्य था। परमेश्वर कभी नहीं चाहता कि प्रचार करते समय हम अपने विश्वास को दिखाने के लिये ऐसे मूर्खतापूर्ण कार्य करें। पतरस, यूहन्ना तथा पौलूस ने लोगों के सामने कभी भी ऐसा नहीं किया। वे लोग केवल यीशु के सुसमाचार का प्रचार करते थे।

कई बाइबल सभाओं में लोग खुल्लम-खुल्ला मज़ाक करते हैं। ज़मीन पर लोटते हैं। शोर करके अवाजें निकालते है, यह सब परमेश्वर के वचन के साथ खिलवाड़ करना है और जो प्रचारक अपने को अपोस्टल प्रेरित या प्रोफेट कहलवाना पसंद करते हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि कभी भी प्रेरितों ने यह नहीं चाहा कि लोग उन्हें अपोस्टल कहें। मरकुस 16:17-18 में जो बातें कही गई है वे बातें यीशु ने अपने प्रेरितों से कही थी। कुछ लोगों पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे ताकि यह सामर्थ उन लोगों को भी मिल सके। (प्रेरितों 8:14-19. 19:1-6)। फिलुप्पुस जो एक प्रेरित नहीं था उसके उपर भी हाथ रखकर यह सामर्थ दी गई थी तथा वह दूसरों को यह सामर्थ नहीं दे सकता था। (प्रेरितों 6:6)। आज हमारे बीच में कोई भी ऑपोस्टल नहीं है। यीशु के प्रेरितों की मृत्यु हो चुकी है। अमरीका का वो प्रचारक जो अपने को अपोस्टल कहता था सांप के काटने से मर गया। आज जो प्रचारक कहता है कि मैं अपोस्टल हूं उसे एक जहरीला सांप दें दें या जहर की शीशी दें दें, वह कभी भी इन चीजों को हाथ नहीं लगायेगा। यीशु ने कहा था झूठे प्रचारकों से सावधान रहो। धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता (गलतियों 6:7)।

परमेश्वर की परीक्षा न लें। शैतान भी यीशु की परीक्षा ले रहा था और उसे बहुत ऊंचाई पर ले जाकर कहाकि अपने आपको यहां से गिरा दे। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आपको गिरा दे। यीशु ने उससे कहा ''तू अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर'' (मत्ती 4)। कई लोग बीमार होने पर इलाज नहीं कराते तथा डाक्टर के पास नहीं जाते और कहते है केवल विश्वास कर लो सब कुछ ठीक हो जायेगा। कई लोग इस चक्कर में अपनी जान से हाथ धो बैठते है। मित्रो धोखा न खाओ। मैं यदि जहरीले सांप को गले में डालकर घुमूं और कहूं कि परमेश्वर मुझे बचा लेगा तो जरा सोचिये क्या होगा? अमरीका का वो प्रचारक बाइबल सभा में लोगों को दिखा रहा था ''देखों मुझे कुछ नहीं होगा''।

यीशु ने शैतान से कहा था, शैतान तू दूर हो जा और वह चला गया। इस मूर्खतापूर्ण कार्य को करने का जिम्मेदार वह प्रचारक था। बेवकूफ़ी न करें। अपनी मूर्खता के लिये परमेश्वर को जिम्मेदार न ठहरायें (समोपदेशक 5:2)। यदि कोई आत्महत्या करता है तो परमेश्वर इसका जिम्मेदार नहीं है। यह आपके लिये एक चेतावनी है। किसी के बहकावे में न आयें। हमारी समस्या के लिये हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तथा वह अपने लोगों की सुनता है, जो उसकी इच्छानुसार चलते हैं।

मनुष्य पापी कब बनता है?

सनी डेविड

कोई भी इंसान जन्म से पापी नहीं होता। जब एक छोटे बालक का जन्म होता है, तो वह नन्हा बच्चा ऐसे ही पवित्र और निष्पाप होता है, जैसे स्वर्ग में परमेश्वर के स्वर्गदूत है। जब परमेश्वर ने सबसे पहले पृथ्वी पर पहले मर्द और पहली औरत को बनाया था, तो वे दोनों भी उस समय निष्कलंक और निष्पाप और पवित्र थे। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि उन्हें परमेश्वर ने अपनी समानता पर और अपने स्वरूप पर बनाया था। किन्तु वे दोनों ही अपनी इच्छा से पापी तब बने जब उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध वह काम किया था जिसे करने को परमेश्वर ने उन्हें मना किया था। वास्तव में, पाप का तात्पर्य इसी बात से है; तो वह पाप करता है। किन्तु जब हम एक नन्हें बालक पर ध्यान करते हैं, तो हम देखते हैं, कि वह नासमझ होता है। उसके भीतर अच्छाई और बुराई को समझने की क्षमता नहीं होती। वह नहीं जानता कि सही क्या है और गलत क्या है। वह मासूम और बेगुनाह होता है। इसलिये, यदि एक छोटे बच्चे की मृत्यु हो जाती है तो उसकी आत्मा कहां जाती है?

बाइबल में हम एक बड़े ही प्रसिद्ध राजा के बारे में पढ़ते है। उसका नाम था राजा दाऊद। दाऊद ने बहुत से अच्छे-अच्छे काम किए थे। वह परमेश्वर का एक अच्छा भक्त था। उसने परमेश्वर की प्रशंसा में बहुत से भजन भी लिखे थे, जिन्हें हम आज बाइबल में भजन संहिता की पुस्तक में पढ़ते हैं। पर दाऊद ने कुछ गलत काम भी किये थे। और उन में से एक अनुचित काम दाऊद ने यह किया था, कि उसने अपने एक कर्मचारी को मरवा दिया था, और उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया था। और बाद में उसी स्त्री से दाऊद के यहां एक पुत्र का जन्म हुआ था। लेकिन इन सब बातों से परमेश्वर दाऊद से बड़ा ही नाखुश था। सो हम पढ़ते हैं, बाइबल में, 2 शमूएल की पुस्तक के 12 अध्याय में, कि जब उस बच्चे का जन्म दाऊद के घर में हुआ था, तो परमेश्वर ने उस बच्चे को ऐसा बीमार कर दिया कि उसके बचने की कोई आशा नहीं रही थी। और सात दिन तक वह बच्चा रोग से ग्रस्त रहा। और दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा कि परमेश्वर उस बालक को चंगा कर दे। दाऊद ने न तो स्नान किया, न कपड़े बदले, और न भोजन खाया। उसके सेवकों ने और घर के लोगों ने उसे बहुत मनाया कि वह खाना तो खा ले। परन्तु दाऊद न माना और वह शोक में डूबा रहा। लेकिन सातवें दिन वह बच्चा मर गया। अब तो सारे राज-घराने में सन्नाटा छा गया। कोई भी दाऊद को यह बताने को तैयार न था कि उस नन्हे बालक की मृत्यु हो गई है। क्योंकि उन्हें डर था, कि जबकि दाऊद उसके बीमार होने पर ऐसा शोक मना रहा था, तो यदि उसे पता चलेगा कि वह बच्चा मर गया है, तो वह क्या करेगा? लेकिन हम पढ़ते है बाइबल में, कि जैसे ही दाऊद को पता चला कि उस बच्चे की मृत्यु हो गई है। तो दाऊद जमीन पर से

उठा। उसने स्नान किया, और अपने सेवको को भोजन परोसने को कहा। उसके सेवक यह सब देखकर और सुनकर बड़े ही चकित हुए। और उन्होंने राजा से जानना चाहा, कि इस सब का मतलब क्या है? कि जब तक वो बालक बीमार रहा, तो तू रोता बिलकता रहा और न स्नान किया और न भोजन किया। पर जब वह बच्चा मर गया है तो तूने स्नान करके कपड़े बदल लिये और खाना भी खा रहा है? ऐसा क्यों? तब राजा ने उनसे कहा, कि जब तब वह बालक जीवित था, तब तक तो मैं यह सोचकर रोता रहा और उपवास करता रहा, कि क्या जाने परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह और दया करके उस बालक को चंगा कर दे। परन्तु अब तो वह मर गया है। तो फिर अब मैं उपवास क्यों करूं? क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं उसे लौटकर तो नहीं ला सकता। हां, मैं उसके पास अवश्य जा सकता हूं, पर वह मेरे पास लौटकर नहीं आ सकता। दाऊद जानता था, कि वह बच्चा स्वर्ग में जाएगा, और दाऊद भी वहीं जाना चाहता था। वह स्वर्ग में जाना चाहता था, जहां वह बालक गया था।

सो, यदि एक नन्हें बालक की मृत्यु हो जाए, तो उसकी आत्मा कहां जाएगी? वह बच्चा स्वर्ग में जाएगा। क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया है। वह उस आयु या उम्र तक पहुंचा नहीं जहां उस में इतनी समझ होती, कि वह अच्छाई और बुराई के बीच अंतर को देख सकता। लेकिन, कुछ लोग ऐसा सोचते हैं, कि हर एक जन आदम के पाप के साथ जन्म लेता है। अर्थात, हर एक बच्चा जन्म से ही, आदम के पाप के कारण, पापी होता है। पर बाइबल ऐसा नहीं सिखाती, कि खट्टे अंगूर पुरखाओं ने खाए हो और दांत खट्टे उनके बच्चों के हो। लेकिन बाइबल में, यहेजकेल की पुस्तक के 18 अध्याय की 20 आयत में इस प्रकार लिखा हुआ है कि, ''जो प्राणी पाप करेगा वही मरेगा। न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी की दुष्टता का पुल मिलेगा।''

इसलिये, प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था, जैसा कि हम मत्ती 19:14 में पढ़ते हैं कि, छोटे बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का ही है। और जब एक दिन प्रभु के चेलों ने प्रभु से पूछा था, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है? तो यीशु ने एक बच्चे को पास बुलाकर उनके बीच से खड़ा करके उन से कहा था, कि मैं तुम से सच कहता हूं, कि यदि आप न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। (मत्ती 18:1-3)। प्रभु यीशु की इन बातों से हम यह सीखते हैं, कि न केवल बच्चे स्वर्ग में प्रवेश ही करेंगे, पर बाकी सब लोग भी जो स्वर्ग में जाना चाहते हैं अपने आप को बदलें और बालकों के समान बनें, क्योंकि यदि तुम न फिरो, और बालकों के समान न बनो, प्रभु यीशु ने कहा था, तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। यहां, बालकों के समान बनने का क्या अर्थ है? क्या हम बालकों के समान रोना और खेलना आरंभ कर दे? या क्या हम बालकों के समान तुतलाना आरंभ कर दे? क्या मतलब है प्रभु के कहने का, कि हम फिरे और बालकों के समान बनें? यहां प्रभु का अभिप्राय इस बात से है, कि बच्चे तो स्वर्ग में जाएंगे ही। पर यदि हम, बड़े

और समझदार लोग भी स्वर्ग में जाना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम बच्चों के समान निर्दोष और पापरहित और बे-गुनाह बनें। क्योंकि जबकि बालकों में पाप नहीं है, पर जो लोग बचपन की अवस्था से निकलकर समझदार और बड़े हो गए हैं, जो समझते हैं, कि बुराई क्या है और अच्छाई क्या है, जो परमेश्वर को अपना लेखा देने के योग्य हो गए है, वे सब के सब परमेश्वर के लेखे में पापी है। अपने मन से, अपने सोच विचारों से सबने पाप किया है और परमेश्वर के अनुग्रह से गिर गए हैं।

इसलिये, बाइबल में, प्रेरितों के 2 अध्याय में, जब हम उन लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जिन्होंने सबसे पहली बार प्रभु यीशु के मुक्ति के सुसमाचार को सुनकर, यीशु के प्रेरितों से पूछा था, कि हे भाईयो अब हम क्या करें? तो उन्होंने जवाब देकर कहा था, कि तुम में से हर अपना-अपना मर फिराए, और अपने-अपने पापों की क्षमा पाने के लिये प्रभु यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। (प्रेरितों 2:37, 38) अर्थात, वे लोग जो मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास ले आए थे, उनके लिये अपने-अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये यीशु की आज्ञा मानकर पानी की कब्र के भीतर दफन होकर बाहर निकलना आवश्यक था। क्योंकि इस प्रकार जल और आत्मा से नया जनम लेकर वे एक नई सृष्टि और स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकते थे। पर ध्यान दें, इस बात पर कि बपतिस्मा लेने से पहले उनसे कहा गया था, कि वे सब अपना-अपना मन फिराएं। अर्थात, पाप को छोड़कर बालकों के समान पाप के बिना बनें। यानि अपने-अपने मनों में इस बात का निश्चय करें कि अब से पाप नहीं करेंगे। और पाप के लिये मर जाएं। और फिर जैसे एक मुर्दे को कब्र के भीतर गाड़ दिया जाता है, वैसे ही बपतिस्मा लेने के द्वारा पानी की कब्र के भीतर गाड़े जाएं।

अब इन बातों को मानने की आवश्यकता किन को है? छोटे बच्चों को नहीं। क्योंकि उन्हें पापों की क्षमा पाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन के भीतर कोई पाप नहीं है। कई बार लोग अज्ञानता के कारण अपने छोटे-छोटे बच्चों का बपतिस्मा करवाते है। किस लिये? क्यों? बाइबल हमें ऐसी शिक्षा नहीं देती। पर हर एक वह व्यक्ति जो बाल-अवस्था से निकल चुका है; जो बड़ा और समझदार हो गया है; जिसमें अच्छाई और बुराई को समझने की क्षमता है। उसे मसीह में विश्वास लाकर अपना मन फिराने की और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है।

परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। वह सबका एक परमेश्वर है। वह किसी एक जाति या धर्म का परमेश्वर नहीं है। वह सारे जगत के सब लोगों का परमेश्वर है। उसने सारे जगत के सब लोगों को मुक्ति पाने का केवल एक ही उपाय दिया है। और हम सब का एक कर्त्तव्य है कि हम उस परमेश्वर का भय मानें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें। क्योंकि एक दिन, अंत में, हम सब को उसी के हाथों में पड़ना है।

क्या आप ने परमेश्वर की इच्छा को मानकर अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर लिया है? वह आप की प्रतिक्षा कर रहा है। आप क्या सोच रहे हैं?

हम बाइबल में क्यों विश्वास करते हैं?

जे.सी. चोट

बाइबल में हम परमेश्वर यीशु तथा पवित्र आत्मा के विषय में पढ़ते हैं। बाइबल में हम बहुत सी बातें पढ़ते हैं। हमारी यह बिनती है कि आप सच्चे मन से इसे पढ़ेंगे। हम आपको कोई गलत बात नहीं सीखायेंगे बल्कि वहीं सिखायेंगे जिसके विषय में बाइबल शिक्षा देती है।

हमारा विषय है कि हम बाइबल में क्यों विश्वास करते हैं? बाइबल एक बहुत प्राचीन पुस्तक है। इसके लेखक बड़े विचित्र थे तथा इसे लिखने में कई सौ साल लग गये थे। इसको लिखने वाले विभिन्न स्थानों से आये थे। इसकी शुरूआत सृष्टि के आरंभ से हुई थी। यह एक पूरी सिद्ध पुस्तक है। यह बताती है कि सृष्टि की शुरूआत के पश्चात एक दिन पृथ्वी का अंत हो जायेगा। यह हमें बताती है कि मनुष्य की उत्पत्ति कैसे हुई? मनुष्य ने पाप किया था तथा उसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। बाइबल में दो भाग है, अर्थात पुराना नियम और नया नियम। पुराने नियम में 39 किताबें हैं तथा नये नियम 37 पुस्तकें हैं। यह सब मिलकर 66 पुस्तकों का संग्रह है। इसमें तीन युगों के विषय में हम पढ़ते है, पहला युग पूर्वजों का काल यानि आदम से लेकर मूसा का जो कि 2500 वर्षों तक रहा। उस समय में परमेश्वर ने पूर्वजों से बातें की तथा उन्होंने उसकी इच्छा को लोगों को बताया। फिर हम देखते हें कि मूसा का युग आया। इस युग में परमेश्वर ने मूसा के द्वारा लोगों से बातें की। मूसा का युग यीशु के क्रूस पर चढ़ने तक रहा तथा यीशु की मृत्यु के पश्चात समापत हो गया। तथा जिसका समय लगभग 1500 वर्षों तक रहा। तीसरा युग मसीही युग जो अभी तक चल रहा है। यह युग यीशु के दोबारा आने तक विद्यमान रहेगा। लगभग दो हजार साल से अधिक इस युग को हो गये हैं। केवल परमेश्वर जानता है कि यह युग कब तक रहेगा। किसी ने इन युगों का वर्णन इस प्रकार से किया है, जैसे कि पूर्वजों का युग सितारों का युग था, मूसा का युग चन्द्रमा का युग तथा मसीही युग सूर्य का युग है। यहां इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक युग में उसके अनुसार उसे रोशनी दी गई और सूर्य का युग वो युग है जिसमें रोशनी बहुतायत से है।

अब जबकि दो प्रकार के नियम बाइबल में दिये गये है इसलिये यह आवश्यक है कि हम इनमें जो भिन्नताएं है उसे समझे। सबसे पहले पूर्वजों के द्वारा परमेश्वर ने अपनी इच्छा को प्रकट किया और यह बात मूसा का युग आने के पश्चात समाप्त हो गया। तथा दूसरी व्यवस्था जो यीशु द्वारा आरंभ हुई और आज तक चल रही है। जब यीशु ने नया नियम दिया तब पुराना नियम समाप्त हो गया। पुराना नियम अभी भी एक इतिहास की तरह है। यह नियम हमें बताता है कि परमेश्वर आज्ञाकारी लोगों को आशिष देता है तथा जो उसकी आज्ञा को नहीं मानते उन्हें वह दण्ड देता है। तथा

अब यह नियम लोगों पर लागू नहीं है। जो आज नियम लागू है, वह है बाइबल का नया नियम। जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया तब पुराने नियम को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया। देखिये इब्रानियों 9:16, 17 इसके विषय में क्या कहता है ''क्योंकि जहां वाचा बांधी गई है, वहां वाचा बांधने वाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है और जब तक वाचा बांधने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। तथा यही लेखक यह भी कहता है कि ''देख मैं आ गया हूं ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं? निदान वह पहले को उठा देता है ताकि दूसरे को नियुक्त करे, उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।'' (इब्रा. 10:9-10)

हम देखते हैं कि बाइबल एक ऐसी पुस्तक है जिसमें इतिहास भरा हुआ है। यह एक ऐसी पुस्तक है जिसमें भूगोल, विज्ञान तथा कविता संग्रह भरा हुआ है। यह परमेश्वर द्वारा प्रेरित पुस्तक है। यह उसका वचन है। (यिर्मयाह 14:1) और प्रेरित पौलूस ने यह बात कही थी, ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचाा गया है और उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। (2 तीमु. 3:16) । पतरस इस प्रकार से लिखता है, ''और कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।'' (2 पतरस 1:21)।

हम यह विश्वास करते हैं, कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। यीशु ने अपने चेलों के लिये प्रार्थना की थी, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर तेरा वचन सत्य है''। पौलुस ने कहा था ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओं, और चिंताओं ओर अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ'' (कुलु. 3:16)। फिर वह कहता है कि विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' (रोमियों 10:17)। वचन पर चलने वाले बनो केवल सुनने वाले नहीं, यह बात याकूब ने बोली थी। (याकूब 1:22)। इसीलिये हम देखते हैं कि बाइबल को परमेश्वर का वचन कहा जाता है। बाइबल की सिद्धता इस बात से पता चलती है कि पुरानी पट्टियों तथा खालों पर लिखे हुए इसके प्रमाण मिले है। बाइबल ने कई हज़ार सवाल पहले यह बात कह दी थी कि पृथ्वी गोल है। (यशायाह 40:22 अय्युब 26:7)। बहुत सी ऐसी खोज हुई है, जिसके विषय में बाइबल में पहले से लिख दिया गया था।

हम विश्वास बाइबल में इसलिये भी करते हैं क्योंकि इसकी भविष्यवाणियां सब पूरी हुई थी। यीशु के जन्म के विषय में भविष्यवाणी हुई थी जो पूरी हुई थी। (यशायाह 7:14)। कलीसिया या राज्य के बारे में भविष्यवाणी हुई थी जो प्रेरितों 2 अध्याय में पूरी हुई थी। बाइबल हमें यह भी बताती है कि मनुष्य इस पृथ्वी पर कैसे आया तथा मृत्यु के बाद फिर क्या होगा? बाइबल के द्वारा मनुष्य को यह पता चला कि वह पापी है तथा उसे उद्धार की आवश्यकता है। यीशु ने कहा था मेरा वचन कभी नहीं टलेगा। (मत्ती 24:35)। यह वचन सर्वदा बना रहेगा। (1 पतरस 1:23)।

मेरी आप से बिनती है कि उसके वचन अर्थात बाइबल को पढ़े। बाइबल सब मनुष्य जाति के लिये हैं। इसी वचन के द्वारा एक दिन हमारा न्याय होगा। (यूहन्ना 12:48)।

बाइबल के बहुत सारे शत्रु भी हैं। कई लोग संसार में हुए जिन्होंने इसका विरोध किया था परन्तु वे संसार से चले गये और यह अभी भी मनुष्यों के पास है। मित्रो इसे पढ़िये यह आपको परमेश्वर को सही प्रकार से जानने में सहायता करेगी। क्या आप बाइबल में विश्वास करते हैं? इसे जानिये। (यूहन्ना 5:39)। इसका अध्ययन कीजिये (2 तीमु. 2:15) यीशु ने कहा था मनुश्य केवल रोटी से ही नहीं जीवित रहेगा, परन्तु प्रत्येक उस वचन से जो उसके मुख से निकलता है। (मत्ती 4:4)।

यदि आप बाइबल का अध्ययन करेंगे तो आप जानेंगे कि उद्धार पाने के लिये आपको परमेश्वर में तथा यीशु में विश्वास करना है कि वह परमेश्वर का बेटा है अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा लेना है। प्रभु आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38,47)।

क्रूस पर चढ़ाए गए डाकू के विषय में आप क्या कहेंगे?

रॉबर्ट आर. टेलर (जूनियर)

कोई अपने आपको सुसमाचार प्रचार करने या आत्माओं के बचाने के कार्य में व्यस्त नहीं कर सकता, जब तक कि वह इस प्रश्न का सामना न कर पाए जा संभवत: एक मन फिराया हुआ पापी मनुष्य आपसे पूछता है कि क्रूस पर चढ़ाए हुए डाकू का बपतिस्मा हुआ कि नहीं?

अक्सर लोग इन नीचे लिखे विषयों की आपस में तुलना करते हैं और यह जानने के इच्छुक रहते हैं कि उनमें क्या समानता है:

1) बपतिस्मा और उद्धार (मरकुस 16:16)

2) बपतिस्मा और पापों की क्षमा (प्रेरितों 2:38)

3) मसीह यीशु का बपतिस्मा और उसके बहुमूल्य लहु में पाई गई आशिषें (रोमियों 6:3-4) और गलतियों 3:27) इन सबके विपरीत जिस व्यक्ति को शिक्षा दी जा रही है वह हर बार संदेह व्यक्त करेगा और पूछेगा कि उस डाकू का, जिसको क्रूस पर चढ़ाया गया, क्या हुआ? क्या वास्तव में यह संभव है कि इस चर्चित डाकू के पास सुसमाचार में दी गई आवश्यक उद्धार की योजना को आज्ञाओं को रद्द करने की सामर्थ है?

जो कुछ भी हमें इस डाकू के बारे में मालूम है उसका विवरण सुसमाचार के चौदह हवालों से मिलता है। (मत्ती 27:38, 44, मरकुस 15:27-28, 32; यूहन्ना 19:28, 32; लूका 23:32-33, 39-49)।

प्रेरितों की पुस्तक में इस डाकू का एक बार भी वर्णन नहीं किया गया है या किसी

भी पत्री में कोई जिक्र नहीं है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी कोई उल्लेख नहीं है।

यदि यह डाकू वार्तालाप का एक मात्र मुख्य चरित्र है तो पवित्र-शास्त्र में इसका जिक्र इतने कम हवालों में क्यों किया गया है। दूसरी बात यदि यह मसीह में आने का इतना महत्वपूर्ण नमूना और हमारे स्वर्ग में जाने का एक मात्र रास्ता है तो नये नियम की अन्य पुस्तकों में इसका वर्णन क्यों नहीं किया गया।

क्यों इतनी बड़ी संख्या में लोग इतनी उत्सुक्ता से अकेली इस घटना के बारे में चर्चा करते हैं जैसा अनुमान है उसके मन परिवर्तन का कार्यक्रम बड़ी सरलता से किया गया था और ऐसा ही आज भी लोग एक सुविधाजनक मन परिवर्तन की क्रिया चाहते है। दूसरी बात लोग एक सौ दस प्रतिशत अश्वस्त है कि इस डाकू की यह ऐसी घटना है जहां मन परिवर्तन बगैर बपतिस्मा में संपन्न हुआ और इसीलिये वह आज भी अपने लिये ऐसा ही चाहते है। आत्मिक तौर से वे किसी भी तरह से पानी को नहीं सह सकते। इसका सख्त विरोध करते हैं। इतना विरोध तो शायद किसी बच्चे ने भी नहाने से पहिले नहीं किया होगा। जितना यह दूसरे समत्रदाय के प्रचारक करते है।

इस प्रायश्चित करने वाले डाकू की घटना को उनके दावे को कायम और मजबूत करने वाला एक सबूत मानते है। ऐसा उनको सोचना है।

उनकी घमंडी कल्पनाओं के गुब्बारे का फटना

क्या ऐसे लोग जो इस डाकू की इस तरह उद्धार पाने का समर्थन करते है, अपनी कल्पनाओं पर पूरे पक्के तरीके से विश्वास करते है? कदापि नहीं। बाइबल इस बात का निश्चयपूर्वक समर्थन नहीं करती कि उसका बपतिस्मा नहीं हुआ था। यदि करती है तो ऐसा कहां लिखा है? यह सत्य है कि उसका बपतिस्मा, उस शुक्रवार को उस कैलवरी की क्रूस पर जहां वह कीलों से जड़ा हुआ था, नहीं हुआ था। परन्तु कौन इतने विश्वास से कह सकता है कि जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला लोगों को बपतिस्मा दे रहा था तो वह वहां मौजूद नहीं था? मत्ती की पुस्तक 3:5-6 में लिखा है;

''तब यरूशलेम और सारे यहूदिया और यरदन के आस-पास के सब स्थानों के लोग उसके पास निकल आए। उन्होंने अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।।''

यदि इस डाकू का शुमार उन लोगों में जो बपतिस्मा लेने आए थे वहां नहीं भी था, तो कौन इतने घमंडी आत्मविश्वास से इसका इनकार कर सकता है कि यूहन्ना 4:1-2 के अनुसार वह वहां मौजूद नहीं था।

''फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है - यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे।''

यह डाकू आवश्य ही इन बपतिस्मा लेने वालों में से एक था। यह हो सकता है कि बाद में वह एक डाकू बन गया। कई लोगों ने बपतिस्मा लिया और बाद में अपराधी हो गए कानून के तोड़ने वाले खतरनाक अपराधी । मैने एक व्यक्ति को बपतिस्मा दिया और कुछ वर्षो बाद में उससे जेल में मिलने गया जहां एक खतरनाक अपराध के लिए सजा काट रहा था।

इस बात पर विचार करें कि समाज से बहिष्कृत लोग जैसे महसूल लेने वाले,

मदिराल्य के ठेकेदार, वैश्याएं वह लोग थे जिन्होंने पहले जल्दी आकर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से अपने-अपने पापों की मानकर यरदन नदी में बपतिस्मा लिया। शास्त्री, फरीसी और सदूकी, उस श्रेणी के लोगों में से थे जिन्होंने यूहन्ना के बपतिस्मा को अस्वीकार किया। ईमानदारी से, इन उपरोक्त श्रेणियों में से जिनमें डाकू बैठता है।

निर्णय लेते समय विचार करने योग्य दो महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर अत्यधिक ध्यान न देना

जो लोग इस डाकू की तरह उद्धार प्राप्त करना चाहते है वह उसकी जातिए पृष्ठभूमि के बारे में और उस सही समय को जब उसका प्रायश्चित काल वार्तालाप क्रूस पर चढ़े यीशु के साथ घटित हुआ भूल जाते हैं। इस डाकू और उसके उद्धार के अध्ययन में यह दोनों बातें बहुत महत्वपूर्ण है।

डाकू का किस जाति से संबंध था? चूंकि वह पलस्तनि देश में रहता था और वहीं उसकी मृत्यु हुई, तो यह पूरी संभावना है कि वह यहूदी जाति से था। यह तो स्पष्ट है कि वह रोमी नहीं था। क्योंकि रोमी साम्राज्य अपने नागरिकों को क्रूस की मृत्यु नहीं देता था। आप सोच रहे होंगे, चलो मान लिया वह एक यहूदी था पर इस बात का जिस विषय पर हम चर्चा कर रहे हैं, क्या संबंध है? इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर जिस पर हम विचार कर रहे हैं, उसका पूरा पूरा संबंध है। यदि वह यहूदी था तो यहूदी माता-पिता से उसका जन्म हुआ था। इसका अर्थ यह हुआ कि यहोबा के साथ वाचा के द्वारा बांधी गई रिश्तेदारी में अपनी मां के गर्भ से ही था। इस प्रकार वह परमेश्वर का पापी पुत्र ठहरा जिससे प्रभु संबंध स्थापित कर रहा है, इसलिये किसी भी तरीके से वह गैर यहूदी नहीं कहलाएगा।

इस डाकू ने अपना पूरा जीवन यहूदी धर्मानुसार व्यतीत किया; थोड़े समय के लिये भी वह सुसमाचार की व्यवस्था के आधीन नहीं रहा। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है।

आज इस संसार में कोई ऐसा गैर यहूदी पापी नहीं जो कि पश्चाताप करने वाले डाकू की परिस्थिति में रहा हो या रह सकता हो, एक ऐसा डाकू जिसका उद्धार कैलवरी क्रूस पर ही हो गया है। ऐसा क्यों हुआ? इसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है:

(1) आज कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं, जो यहूदी धर्म को तब से मान रहा हो जब से उसका प्रचलन हुआ।

(2) आज हर प्राणी अपने पूरे जीवन में उसी समय से है जब से सुसमाचार की व्यवस्था का प्रचलन हुआ।

(3) आज कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो अपने पूरे जीवन भर परमेश्वर के साथ वाचा के द्वारा बांधी गई रिश्तेदारी में रहा हो जैसे यह डाकू उस स्थिति में था।

(4) इससे पहले कि प्रभु यीशु मसीह अपने प्राण त्यागते उन्होंने उस डाकू से वायदा किया कि तू आज ही मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा। आज कोई भी व्यक्ति इस स्थिति में नहीं हो सकता।

(5) मसीह यीशु की इच्छा अभी लागू नहीं हुई थी यह तो हमारे जीवनों में आरंभ से ही लागू थी।

(6) आज हर व्यक्ति जो अलग जीवन जी रहा है वह मसीह यीशु की मृत्यु के बाद में जी रहा है और उससे एक क्षण भी पहले नहीं।

(7) जब लूका 23:43 वचन, ''कि तू आज ही मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' बोला

गया उस समय अंतिम आज्ञा मत्ती 28:19, 20 दी गई ''सब जातियों को चेला बनाओ और उन्हें सब बाते जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ'' लागू नहीं थी; यह तो हमारे जीवनों में हमेशा से ही लागू है।

(8) प्रभु यीशु ने यह वचन डाकू से अपनी और उसकी मृत्यु से पहले ही बोल दिया था। आज के समय में कोई भी व्यक्ति उस विशेष स्थिति में नहीं हो सकता। अगर ऐसा है, तो क्यों?

जो दूसरी बहुत महत्वपूर्ण विचार करने योग्य बात मसीह यीशु की वाचा है, उस पर भी अकसर ध्यान नहीं दिया जाता।

जब तक वाचा बांधने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। जब वह जीवित है तो अपनी संपत्ति के साथ अपनी इच्छानुसार कुछ भी कर सकता है; परन्तु उसकी मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति उसी को मिलती है जिसके नाम वसियतनामा है। बाइबल में लिखा है, ''क्योंकि जहां वाचा बांधी गई है वहां वाचा बांधने वाले की मृत्यु का समझलेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बांधने वाला जीवित रहता है तब तक वाचा काम की नहीं होती।'' (इब्रानियों 9:16, 17)।

क्या यीशु की वाचा सक्रिय काम के योग्य थी, जब डाकू ने उससे कहा, ''हे यीशु जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुधी लेना'' नहीं! क्या यीशु की वाचा कार्यरित थी जब यीशु ने डाकू से कहा कि वह दोनों आज ही स्वर्गलोक में होगें? नहीं! क्या अंतिम आज्ञा जिसके साथ पानी का बपतिस्मा का प्रयोजन भी था, लागू थी? नहीं!

ऐसा क्यों? क्योंकि यीशु-वाचा बांधने वाला अभी जीवित था, उसकी अभी मृत्यु नहीं हुई थी।

यीशु ने अपनी सेवा के दौरान, जब वह इस पृथ्वी पर था, बारबार लोगों के हर किस्म के पाप क्षमा किए। कोई स्पष्ट और एक ही प्रकार की नीति नहीं अपनाई।

मरकुस की पुस्तक के दूसरे अध्याय में एक लकवे के मारे मरीज को उसके चार मित्रों द्वारा यीशु के सामने लाया गया। यीशु ने उन मित्रों के विश्वास को देखकर कहा, ''हे पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए।''

क्या यीशु आज हमारे चार मित्रों के विश्वास को देखकर हमें क्षमा कर देगें? इसका उत्तर स्पष्ट है नहीं! लूका 7:37-50 यीशु ने एक स्त्री के पाप क्षमा कर दिए, जिसने उसके पांव अपने आंसुओं से भिगोए और अपने बालों से पोछें और उन पर इत्र डाला। स्पष्ट है आज प्रभु की ऐसी कोई योजना नहीं है। ऐसा इसलिए संभव नहीं है क्योंकि आज वह प्रत्यक्ष रूप से हमारे बीच में उपस्थित नहीं है जो ऐसी किसी घटना का सामना करें मत्ती 19, मरकुस 10 और लूका 18 में एक धनवान व्यक्ति है जिससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह मूसा की व्यवस्था को माने अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को देदे और इसके पश्चात यीशु को अपने आपको उसके चेले के रूप में समर्पित करे।

मुझे आश्चर्य है कि प्रचारक इस घटना को एक मन परिवर्तन के नमूने के तौर पर क्यों नहीं प्रस्तुत करते। वह हमेशा डाकू के ही पीछे क्यों पड़े रहते है, कभी इस धनवान सरदार का वर्णन नहीं करते। ऐसा क्यों? इसका उत्तर स्पष्ट है -

यीशु ने जक्कई के घर स्वयं जाकर उसके परिवार का उद्धार किया। लूका 19:9

में इसका वर्णन मिलता है। स्पष्ट है कि आज के युग में क्षमा प्रदान करने की यीशु की ऐसी कोई योजना नहीं है, क्योंकि आज यहां नहीं है कि शारीरिक तौर से किसी के घर व्यक्तिगत रूप से उससे मिलने जाए।

क्या वास्तव में डाकू का उद्धार हो गया था?

क्रूस पर चढ़ाए गए तीन व्यक्तियों के आरंभ में दोनों डाकुओं को कोई पश्चाताप नहीं था और वह दोनों बीच वाली क्रूस के लिये अपमानजनक भाशा का प्रयोग कर रहे थे। ''इस प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, उसकी निंदा करते थे।'' (मत्ती 27:44) बाद में एक डाकू के ऊपर कुछ आत्मिक प्रभाव हुआ और आत्मसमर्पण करते हुए निष्ठापूर्वक स्वभाव से पश्चाताप की स्थिति में यीशु की ओर हो गया। उसने दूसरे डाकू को डांटकर कहा, ''क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने पापों का ठीक फल पा रहे हैं, पर उसने कोई अनुचित काम नहीं किया।'' उसने यीशु से कहा, ''जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुधि लेना।''

ऐसा प्रतीत होता है कि इस डाकू को यीशु और उसके राज्य के बारे में पहले से कुछ ज्ञान था। उसी रोज कैलवरी के क्रूस पर उसने यह सब बातें नहीं सीखी थी, क्योंकि ऐसा कहीं कोई लिखित ईश्वरीय प्रमाण नहीं है कि राज्य के बारे में पहले कोई जानकारी दी गई हो। यह इस बात की भी पुष्टि करता है कि जैसे हमने पहले संभावना प्रकट की थी कि या तो उसने 'राज्य निकट है' के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से, या यीशु से या किसी शिष्य से इसके बारे में सुना था।

यीशु ने उसकी प्रार्थना का आदर करते हुए उसे स्वीकार किया और उससे वायदा किया कि आज ही वह दोनों स्वर्गलोक में साथ-साथ होंगे। इस वार्तालाप में इस बात का कोई संकेत नहीं है कि उनकी देहों का अभी या बाद में क्या होगा, वह कहां रखी जाएगी। यहां केवल उनकी आत्माओं का वर्णन है कि वह कहां जाएगी। दोनों अधोलोक में जाएंगे वह स्थान जहां स्वर्गवासी आत्माएं रखी जाती है। इस स्थान को स्वर्गलोक कहते हैं। ''मैं तुमसे सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'' (लूका 23:43) इस स्थान में आनन्द है और यहां अब्राहम की गोद में पहुंचाया जाता है जिसका वर्णन लूका 16:19-31 में मिलता है।

इस कारण जो केवल सुरक्षित है (बच्चे और मानसिक तौर से कमजोर) और जिनका उद्धार हुआ है वह ही स्वर्गलोक में जाते हैं। परिणाम जो निश्चित है जिसका यीशु ने उसे उद्धार प्रदान करने का वायदा किया और आशीषित किया।

अब इस विचार पर और ज्यादा खींचा तानी करने की आवश्यकता नहीं है।

एक ऐसा प्रश्न जो बाइबल के लिखे जाने के समय चर्चा का विषय कभी नहीं रहा

क्रूस पर चढ़ाए गए डाकू के विषय में अधिकतर जानकारी की शुरूआत प्रेरितों की मृत्यु के पश्चात हुई।

आज के आधुनिक युग का एक परमावश्यक प्रश्न बपतिस्में का है; जिसकी योजना परमेश्वर ने अन्य जाति के पापों की क्षमा प्रदान करने के लिये की। इस प्रश्न के लेकर

बहुत बेकार के सकल किए जाते हैं और इसका जमकर विरोध किया जाता है।

मत्ती 28-29 में यीशु ने अंतिम आज्ञा चेलों को दी, कि जाओ सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। किसी चेले ने कोई बेकार का सवाल नहीं पूछा और न ही इसका विरोध किया और न ही यह प्रश्न पूछा, ''हे प्रभु इस डाकू का क्या जिसको क्रूस पर चढ़ाया गया?'' जैसा मरकुस 16:16 में लिखा है, यीशु ने स्पष्ट किया कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। यहां भी हम देखते हैं किसी किसम का कोई विरोध किसी चेले ने नहीं किया और न ही पूछा, ''हे प्रभु उस डाकू का क्या जिसको क्रूस पर चढ़ाया गया?''

मेरा ऐसा पक्का विश्वास है यदि आज के समय के संप्रदायों के प्रचारक वहां उपस्थित होते, जब अंतिम आज्ञा दी जा रही थी जिसमें बपतिस्में को प्राथमिकता दी गई है, तो अवश्य वह इसका विरोध करते। क्या आज भी वह ऐसा ही नहीं कर रहा है?

उनके इस विरोध को किस प्रकार शांत किया जा सकता था।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने प्रचार किया, तब सुनने वालों के हृदय छिद गए और वह पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, ''हे भाईयो हम क्या करें?'' पतरस ने उनसे कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।'' (प्रेरितों 2:38)। प्रेरितों 8 (आठ) अध्याय में फिलघुस ने सामरियो और कूश देश के अधिकारी खोजे को प्रचार किया। यहां जो दो हृदय परिवर्तन हुए, उन दोनों में विशेष रूप से मुख्य भूमिका विश्वास और बपतिस्मे की थी। फिर भी पहले हृदय परिवर्तन में किसी ने भी डाकू के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया।

नीचे लिखे पांच व्यक्तियों/घरानों के हृदय परिवर्तन का सर्वेक्षण कर सकते हैं:

1) प्रेरितों की पुस्तक 10 अध्याय में कुरने लियुस और उसका घराना।

2) प्रेरितों की पुस्तक 16 अध्याय में लुदिया और जेल का दरोगा।

3) प्रेरितों 9, 22, 26 अध्यायों में शाऊल के विषय में।

4) प्रेरितों 18:8 में कुरिन्थुस नगर के आराधनालय के सरदार क्रिसपुस और उसका घराना।

5) प्रेरितों 11 (ग्यारह) अध्याय में अन्तक्रिया के लोग।

इन सब को शिक्षा दी गई, सबने प्रभु पर विश्वास किया, सबने अपने अपने पापों से मन फिराया किया, सबने अंगीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, सबने डुबकी का बपतिसमा लिया और सबको परमेश्वर ने कलीसिया में मिला दिया परन्तु क्यों? क्योंकि यह सब उस डाकू की नाई उद्धार पा चुके थे? नहीं! इन सबने सुसमाचार की आज्ञा का पालन किया था। ऐसा नहीं है कि किसी ने डाकू का रिश्तेदार होने का बहाना किया? क्यों? क्योंकि उनके पास कोई गुमराह करने वाले प्रचारक नहीं थे। तब किसने उनको आलोचना और निंदा करना सिखाया। यही कारण है कि आज हमारे बीच में आलोचना और निंदा करने वाले है। जब प्रचार के सत्य का विरोध करना छोड़ देंगे तो अन्य जाति के पापी भी इसका प्रयोग बंद कर देंगे। वह व्यर्थ के प्रश्न पूछ कर आलोचना और निंदा करना छोड़ देंगे। वे निश्चित रूप से इसका कोई संबंध बाइबल से नहीं जोड़ेंगे क्योंकि यह प्रश्न वहां है ही नहीं।

प्रिय मित्रो! आप इस डाकू की तरह उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते। अब आपको

अंतिम आज्ञा की उन शर्तों के अनुसार चलना होगा जो शीशे की तरह पारदर्शी है:

अवश्य है कि अब आप मसीह के वचन को सुने, उसक ईश्वरत्व पर विश्वास करें, अपने पापों से मन फिराएं, यीशु में विश्वास रखे, डुबकी का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर द्वारा उसकी कलीसिया में शामिल हो जाएं।

इसके पश्चात ध्यान लगाएं, प्रतीक्षा करें, कार्य करें और आराधना करें।

मेरे और आपके स्वर्ग में प्रवेश करने का केवल एक ही रास्ता है और वह है सुसमाचार की आज्ञा का पालन करना; डाकू के उद्धार पर विश्वास न करना, उसकी आलोचना और निंदा करना, एक ऐसा रास्ता है जो नरक की ओर ले जाता है।

उद्धार के लिये प्रेरितों की पुस्तक का अध्ययन करें नाकि एक दर्जन पदों को देखें जो इस यहूदी धर्म से संबंधित प्रायश्चित करने वाले डाकू का चित्रण करती है।

अनुवादक - भाई फैरल

उद्धार के विषय में

बिल जॉनसन

''मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिये।''

पहला वक्तव्य

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये केवल परमेश्वर का वचन ही इसके अधिकार का दावा करता है। ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिनों में उसे दोषी ठहराएगा। क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की; परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या कहूं और क्या बोलूं।'' (यूहन्ना 12:48, 49)।

''जो मुझसे, 'हे प्रभु! हे प्रभु! कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वहीं जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'' (मत्ती 7:21)।

''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया और उपदेश और समझाने और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये, क्या आप इस बात से सहमत हैं कि केवल परमेश्वर के वचन को ही, इसका अधिकार है?

दूसरा वक्तव्य

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पहले आपको इस बात को समझना और जानना है कि आपकी दशा एक खोये हुये मनुष्य की सी है ।

जैसा लिखा है: ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।'' (रोमियों 3:10)।

''इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।'' (रोमियों 3:23)

''जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है, और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।'' (1 यूहन्ना 3:4)।

''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियों 6:23)।

क्या आप एक पापी है?

तीसरा वक्तव्य

सही उत्तर पाने के लिये आवश्यक है कि आप परमेश्वर के वचन को सुने।

और उसने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।'' (मरकुस 16:15)।

क्योंकि ''जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।''

फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय में सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? (रोमियों 10:13, 14)।

क्या आप परमेश्वर का वचन सुनेंगे?

चौथा वक्तव्य

आपको यह विश्वास करना चाहिए कि मसीह यीशु ने हमारे पापों के लिये अपने प्राण दिये, वह गाड़ा गया, मरे हुओं में से जिलाया गया और अब परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।

''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)

''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' (रोमियों 5:8)।

''पर हम यीशु को देखते हैं.... कि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखें।'' (इब्रानियों 2:9)।

''हे भाईयो, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहले सुना चुका हूं.... इस कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।'' (1 कुरिन्थियों 15:1-4)

''वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी और बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं।'' (1 पतरस 3:22)।

क्या आप उन वास्तविकताओं को मानते हैं कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, गाड़ा गया, तीसरे दिन जी उठा और स्वर्ग में उठा लिया गया?

पांचवां वक्तव्य

तुम्हें यीशु मसीह की आज्ञा माननी चाहिये,

''मुझे क्या करना चाहिये?''

''प्रभु होने पर भी उसने आज्ञा माननी सीखी....और सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।'' (इब्रानियों 5:8, 9)

क्या आप यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानेंगे?

1. आपको यह विश्वास करना चाहिये कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।

''यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने दिखाए.... ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।'' (यूहन्ना 20:30, 31)।

''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)

''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)

मसीह में विश्वास, यह सच्चाई कि वह मर गया, गाडा गया, तीसरे दिन जी उठा और स्वर्ग में उठा लिया गया, यह बात जानना और मान लेना, इस प्रश्न के उत्तर के लिये आवश्यक है।

2. हमें अपने पापों से मन फिराना है।

''परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।'' (प्रेरितों 17:30)

''मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होगे।'' (लूका 13:3)

मसीह के बारे में जानने के बाद मनुष्य को अपना विचार बदलना आवश्यक है इस प्रश्न के उत्तर को देने के लिये।

3. यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, यह बात हमें में दूसरों के सामने स्वीकार करनी चाहिये।

''यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करें.... क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है। (रोमियों 10:9, 10)

''और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।'' (फिलिप्पियों 2:11)

इस प्रश्न के उत्तर के लिये यह आवश्यक है कि हम इस बात का अंगीकार करे कि प्रभु यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है।

4. पापों की क्षमा के लिये यह आवश्यक है कि जल का बपतिस्मा लिया जाए।

यीशु ने उत्तर दिया, ''मैं तुझसे सच-सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'' (यूहन्ना 3:5)

''क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाए, जिन्होंने हमारे

समान पवित्र आत्मा पाया है?'' और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए...'' (प्रेरितों 10:47, 48)

पतरस ने उनसे कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा, के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' (प्रेरितों 2:38)

''उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा तुम्हें बचाता है.....''

''क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' (गलतियों 3:26, 27)

मत्ती 26:28 में यीशु कहते हैं यह वाचा का मेरा वह लहु है जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।

यूहन्ना 19:34 में उन्होंने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरन्त लहु और पानी निकला हालांकि यीशु अपने प्राण त्याग चुके थे। यीशु ने अपनी मृत्यु में हमारे उद्धार के लिये अपना बहुमूल्य लहू बहाया।

रोमियों 6:3, 4 में हमें बताया गया है कि हमारा उद्धार तब होता है जब हम यीशु के लहु के सम्पर्क में आते हैं: ''क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाडे गए। इसलिये बपतिस्मे के द्वारा हम उसके साथ उसकी मृत्यु में गाड़े जाते हैं ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

छटा वक्तव्य

आप केवल एक मसीही कहलाएंगे - मसीह की कलीसिया के सदस्य

''अत: जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया.... परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (प्रेरितों 2:41 और 47)

जो मसीह की आज्ञा मानते हैं वह उसकी कलीसिया के सदस्य होंगे। उनका संबंध किसी संप्रदाय से नहीं होगा और केवल विश्वास से चलते रहेंगे।

''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं।'' (2 कुरिन्थियों 5:7)

इस उपरोक्त कथन को हम सार-संक्षेप में ऐसा कह सकते हैं कि बाइबल सिखाती है कि जब आज हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो स्वयं परमेश्वर लोगों को अपने पाास बुलाता है कि वह उसके बेटे और बेटियां बनें।

और उसने कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:15, 16)

''जिसके लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु

यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।'' (2 थिस्सलुनीकियो 2:14)

जो भी मसीह के सुसमाचार को सुनता है, ''अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता हैं'' (रोमियों 10:17)।

और इन सच्चाईयों पर विश्वास करता है कि मसीह मारा गाड़ा गया और तीसरे दिन जी उठा (मरकुस 16:15, 16; 1 कुरिन्थियों 15:1-4), अपना मन फिराता है (प्रेरितों 17:30, 31); इस बात का अंगीकार करता है कि मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:9, 10) और पापों की क्षमा के लिये पानी का बपतिस्मा लेता है (प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 8:36) वह परमेश्वर का पुत्र और पुत्री बन जाता है। (गलतियों 3:26, 27)

जब हम मसीह की आज्ञा को मानते हैं तो वह हमें अपनी कलीसिया से मिला देता है (पेरितों 2:47)

हमारा संबंध किसी भी संप्रदाय से नहीं होगा।

अब आप केवल एक मसीह होने के नाते जीवन की सब से बड़ी आशीश का आनन्द ले सकते है। और जैसा कि हमने वचन में लिखा देखा कि हफ्ते के पहले दिन परमेश्वर की आराधना करने लगेगें। यह आराधना जिसको हम स्वीकारते हैं और जो हमें प्रेरित करती है इसके द्वारा हम प्रभु भोज में सम्मलित होंगे। ''सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए।'' (प्रेरितों 20:7); और जैसा परमेश्वर आशीष देगा उसके अनुसार कलीसिया के कार्यों के लिये आर्थिक सहायता देने का अवसर भी होगा।

''जब उस चंदे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, तुम में से हर एक सप्ताह के पहले दिन, अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करो।'' (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)

परमेश्वर के वचन को सुनेंगे, मिलकर प्रार्थना करेंगे और परमेश्वर की महिमा और स्तुति मसीही गीतों और भजनों के द्वारा करेंगे।

''और वह प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' (प्रेरितों 2:42)

''और आपस में भजन, और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो; और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।'' (इफिसियों 5:19)

हम विश्वास से चलते रहे और परमेश्वर की अराधना आत्मा और सच्चाई से करते रहे।

''हम रूप को देखकर पर विश्वास से चलते है।'' (2 कुरिन्थियों 5:7)

''परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है, जिससे सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूंढ़ता है।

परमेश्वर आत्मा है और उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करे।'' (यूहन्ना 4:23, 24)

यह नये नियम के अनुसार आराधना का नमूना है।

''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'' (प्रेरितों 22:16)

अनुवादकः फैरल भाई

नाम जो हमें मिला है

गैरी सी. हैम्टन

सैकड़ों अलग-अलग धार्मिक समूह आपस में अलग-अलग नामों से बंटे हैं। इस कारण बहुत से नाम मानवीय उपज हैं, क्योंकि उनका परमेश्वर के वचन में उल्लेख नहीं है। क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि हमारा नाम क्या है?

बाइबल में नाम रखने को बड़ा महत्व दिया गया है। अब्राम का अर्थ है "उन्नत पिता।" परमेश्वर ने उसका नाम बदलकर अब्राहम कर दिया, जिसका अर्थ है "बहुतों का पिता" (उत्पत्ति 17:1-8)। सारे का अर्थ है "मेरी राजकुमारी", परन्तु परमेश्वर ने बदलकर उसका नाम "राजपुत्री" अर्थात सारा रख दिया (उत्पत्ति 17:15-16)। एसाव के भाई का नाम "एड़ी पकड़ने वाला" या चालबाज रखा गया, जिसे हम याकूब के नाम से जानते हैं, जिसने स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध किया था और उसने उसका नाम बदलकर इस्राएल रख दिया, जिसका अर्थ है, "परमेश्वर से युद्ध करके जीत गया" (मत्ती 32:22-32)। यीशु ने शमौन, जिसका अर्थ "सुनना" है, से बदलकर पतरस रख दिया, जिसका अर्थ है "पत्थर" (यूहन्ना 1:40-42)।

बेशक हमारे प्रभु को जो नाम मिलने वाले थे, उन्हें लम्बे समय से संभालकर रख गया था और उनका अर्थ बहुत ही बड़ा है। स्वर्गदूत ने युसूफ को बताया, "वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा" (मत्ती 1:21)। आयत 23 में स्वर्गदूत ने यशायाह 7:14 का हवाला देते हुए कहा, "और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ।" उसे मसीह कहा जाता है, क्योंकि वह परमेश्वर का अभिषिक्त है। हम उसे प्रभु कहते हैं, क्योंकि हमारे जीवन पर उस का सर्वोच्च अधिकार होना आवश्यक है (रोमियों 7:24-25; 1 कुरिन्थियों 6:19-20)। रोमियों 10:9 में कहा गया है, "यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे।" धार्मिक जगत में बहुत से लोग यीशु को उस नाम के सिवाय जो वचन में मिलता है, किसी अन्य नाम से पुकारना नहीं चाहेगे।

यशायाह 62:1, 2 में यशायाह ने पहले से उस दिन को देख लिया जब प्रभु की धार्मिकता और उद्धार यरूशलेम में से निकलना था। उस समय अन्य जातियों, देशों ने प्रभु की धार्मिकता को सुना था और परमेश्वर के लोगों को एक नया नाम मिला था। नये नियम के पवित्र शास्त्र से पता चलता है कि अन्ताकिया में पहली कलीसिया थी जिसमें यहूदी और यूनानी दोनों थे। कितना महत्वपूर्ण है कि उसी जगह पर कभी

चेलों को "मसीही" कहा जाने लगा (प्रेरितों 11:26)। बाद में पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को भी मसीही बनाने का प्रयास किया था और पतरस ने चेलों को प्रोत्साहित किया था कि यदि वे मसीही होने के कारण दुख उठाएं तो इस नाम के कारण परमेश्वर को महिमा दे (प्रेरितों 26:28; 1 पतरस 4:16)। हम में से हर कोई इससे सहमत होगा कि नाम मसीही स्वीकार किए जाने के योग्य ही था। फिर हम अन्य सब नामों को छोड़कर मसीही ही क्यों नहीं कहलाते?

परमेश्वर जो भेजता है

सिसिल मे, जूनि.

पूरी बाइबल में ही परमेश्वर किसी न किसी को कुछ ऐसा कहने के लिए जिसकी आवश्यकता है, कहीं भेजता है। "जिस दिन तुम्हारे पुरखा मिस्र देश से निकले उस दिन से आज तक मैं तो अपने सारे दासों, भविष्यद्वक्ताओं को, तुम्हारे पास बड़े यत्न से लगातार भेजता रहा" (यिर्मयाह 7:25)।

- मूसा को उसने फिरौन से यह कहने के लिए भेजा, "मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे" (निर्गमन 5:1)।
- नातान को उसने दाऊद से यह कहने भेजा, "तू ही वह मनुष्य है" (2 शमुएल 12:7)।
- आमोस को उसने बेतेल से यह कहने भेजा, "अपने परमेश्वर के सामने आने के लिए तैयार हो जा" (आमोस 4:12)।
- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को उसने यहूदा के लोगों से यह कहने भेजा, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है" (मत्ती 3:2)।
- पतरस को उसने यरूशलेम में यह कहने के लिए ठहरने को कहा, "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम गवाह है" (प्रेरितों 2:32)।
- फिलिप्पुस को उसने कूश देश के अधिकारी को "यीशु" का प्रचार करने के लिए भेजा (प्रेरितों 8:35)।
- हमें वह हर किसी को सुसमाचार सुनाने और यह वचन देने के लिए भेजता है कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा" (मरकुस 16:16)।

आपने सुना?
आप जा रहे हैं न?
क्या कहा?
"तब मैंने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किस को भेजूं, और हमारी ओर

से कौन जाएगा? तब मैंने कहा, मैं यहां हूं! मुझे भेज। उसने कहा, जा..." (यशायाह 6:8,9)।

लोभ पर पाप, पाप पर मृत्यु और मृत्यु पर मसीह की विजय

डा. एफ. आर. साहू (छ.ग.)

लोभः लोभ, अपने आप में सही विवरण नहीं है, तथा इस शब्द का वास्तविक अर्थ है ''बुरी इच्छा'' और इस पर नियंत्रण पाने में मनुष्य लगभग नाकाम रहा है। हम इसे बुरी इच्छा इसलिये कह सकते हैं क्योंकि परमेश्वर द्वारा दी गई इच्छा के विरूद्ध अधिक प्राप्त करने की हमारी लालसा होती है जो परमेश्वर नहीं चाहता।

उदाहरण के लिये खाना-खाना, एक सामान्य बात है, परन्तु पेटू होना पाप है और जैसे नींद लेना भी एक सामान्य बात है, परन्तु सुस्तीया आलसीपन में लीन होना पाप है और जैसे विवाह सब बातों में आदर कि समझी जाय पर व्याभिचार या कुदृष्टि करना पाप है (इब्रा. 13:4)।

कोई बुरी इच्छा वैसी लगती नहीं, जैसी वास्तव में वह होती है। पर शैतान इसे ऐसी सुन्दर सजा देता है (सुसज्जीत कर देता है), कि मनुष्य उसकी ओर खिंच कर और फंस कर परीक्षा में पड़ जाता है। शैतान प्रत्येक व्यक्ति की सामर्थ्य और कमजोरियों से अच्छी तरह से परिचित है उसे मालूम है कि हमें कौन सी बातें लुभाती, ललचाती और बहकाती है।

बाइबल में हमें ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिनमें ''बुरी इच्छा'' परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कार्यों को या (आज्ञा न मानने की जीवन शैली) को जन्म दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप बहुत सी पीड़ाएं उत्पन्न हुई थी। जैसे-हव्वा को मना किए हुए फल की अभिलाषा से झूझना पड़ा था और उसकी अभिलाषा ने परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कृत्य के लिये द्वार खोल दिया (पढ़ें उत्पत्ति 3 अध्याय)।

और जैसे आमोन ने तामार की लालसा की और उसकी इस तरह की अनियंत्रित अभिलाषा ने उसे जानवर के स्तर से नीचे ला दिया। (2 शमू 21 अध्याय)। और जैसे आहाब ने नाबोत की दाख की बारी की इतनी लालसा की कि उसने विनाशकारी कार्यों को अंजाम दिया। (1 राजा 21 अध्याय)। और बेतशेबा के लिये राजा दाऊद की अभिलाषा एक व्याभिचार तथा हत्या का कारण बना (2 शमू अध्याय 11, 12)। इसी तरह की बहुत सी अभिलाषाएं हो सकती है जिसमें मनुष्य खिंच कर ही परीक्षा में पड़ता है और वह पाप को जन्म देते हैं। बाइबल इसी शिक्षा पर जोर देती है और पाप के प्रति मृत्यु दण्ड की कठोर घोषणा भी करता है। जैसे लिखा है ''ऐसा भी मार्ग है जो मनुष्यों को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अंत

में मृत्यु ही मिलती है।'' जैसे लिखा है ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।'' (नीति 14:12, रोमि 6:23)। बाइबल में अभिलाषाओं और उससे उत्पन्न परिणामों का विवरण कुछ इस प्रकार हुआ है। ''परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभलाषाओं से खिंच कर और फंस कर परीक्षा में पड़ता है, फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।'' (याकूब 1:14,15)।

पाप: इस पृथ्वी पर मनुष्यों की यदि कोई भयंकर समस्या है तो वह है पाप परन्तु ''पाप'' क्या है? वास्तविकता में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। इस दुनिया में लगभग पाप और अपराध के विषय में अधिकतर सुनने को मिलता रहता है।

परन्तु जो लोग इसके विषय में जानते हैं उन्हें पता है कि पाप एक बुराई है, दुष्टता तथा सब प्रकार की अभक्ति है और तमाम अच्छाईयों के विरूद्ध है।

बाइबल में पाप की परिभाषा को इस प्रकार बताया है कि ''जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोधा करता है और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।'' (1 यूहन्ना 3:4)। पाप भी कई प्रकार के हो सकते हैं, पर पौलुस प्रेरित ने विशेष कर पापों का वर्णन शारीरिक दुष्कामनाएं कहते हुए कुछ इस प्रकार से उल्लेख किया है अर्थात ''शरीर के काम तो प्रगट है, अर्थात व्याभिचार गंदे काम, लुचपन, मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीला क्रीड़ा और इनके जैसे और काम है इसके विषय में तुमसे पहले कह देता हूं, जैसा पहले से कह भी चुका हूं कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारीस न होंगे'' (गलाति 5:19-21)। इससे स्पष्ट जाहिर होता है कि शारीरिक दुष्कामनाएं मनुष्य के लिये पाप है।

पवित्र बाइबल के अनुसार जाति में पाप का एक और दूसरा कारण बनता है और वह है अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य और पक्षी चौपायों और विभिन्न प्रकार की रेगने वाले जीव-जंतुओं की मूरतों की समानता में बदल देना अर्थात परमेश्वर की सच्चाई को बदल कर झूठ बना देना और सृजन हार परमेश्वर को छोड सृष्टि की उपासना की दृष्टि में पाप है। और ऐसा करके हम परमेश्वर को और भी क्रोध दिलाते हैं? (रोमि. 1:18-32)। क्योंकि परमेश्वर (यहोवा) ने मनुष्यों को पहले ही से आज्ञा दे चुका था कि ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना, तू अपने लिये कोई मूर्ति खोद कर न बनाना, जो आकाश में या पृथ्वी पर या पृथ्वी के जल में है। तू उसको दण्डवत न करना और न उसकी उपासना करना .. ..।'' (निर्ग 20:3-5)।

अर्थात अन्य शब्दों में पाप की परिभाषा यह भी होती है कि परमेश्वर का नियम विद्यमान है, परन्तु जब कोई उसे मानने से चूक जाता है या उसके नियम को तोड़ता है तो वह पाप करता है। और इसी से स्पष्ट पता चलता है कि पाप का यह

पातक स्वभाव मानव शरीर में जन्मे किसी भी व्यक्ति को डसने से नहीं छोड़ा है। सबके सब उस पाप की आक्रमक शक्ति के शिकार हुए हैं। और मनुष्य अपने पापों के कारण परमेश्वर से बिलकुल अलग हो चुके हैं और पवित्र बाइबल इसीलिये स्पष्ट कहती है ''इस लिये कि सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है।'' (रोमि 3:23)। और जैसे कि लिखा है ''परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।'' (यशा 59:2)। अर्थात पाप मनुष्य को परमेश्वर से दूर कर देता है।

संसार में पाप कौन कर सकता है? जिसमें भले या बुरे का ज्ञान मालूम हो? बच्चे जिसमें भले या बुरे का ज्ञान मालूम ही नहीं वह कैसे कर सकता है? इसलिये मनुष्य को हम जन्मजात पापी नहीं कह सकते, क्योंकि भले और बुरे का ज्ञान मालूम होने के बाद ही कोई बुरा करता है तब ही उसके लिये वह पाप गिना जाता है। क्योंकि यदि कोई भले या बुरे में से चुनना ही नहीं जानता हो वह कैसे पाप कर सकता है? और पाप करना तो प्रत्येक मनुष्य की व्यक्तिगत समस्या है, जो उनके अपने व्यवहार ही से उत्पन्न होता है जैसे ''जो प्राणी पाप करे वही मरेगा न तो पुत्र पिता के व्यवहार अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपने ही दुष्टता का फल मिलेगा।'' (यहे 18:20)।

प्रियो, मनुष्यों को आत्मा परमेश्वर की ओर से ही मिलती है जैसे लिखा है ''तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया है लौट जाएगी।'' (सभो 12:7)। अर्थात इसका अर्थ यह हुआ कि हमारा जन्म इस संसार में पापी आत्मा से नहीं होता, क्योंकि हमारा जन्म यदि पापी आत्मा से हुआ तो स्वयं परमेश्वर ही इस बुराई का देने वाला ठहरेगा, जो निःसंदेह संभव नहीं है।

पाप का अंत क्या है?

और पाप का अंत है मृत्यु? जैसे लिखा है ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है'' (रोमि 6:23)। पाप मनुष्यों के जीवन में बहुत से दुःखों को लेकर आता है और उस पर मृत्यु का अपना अधिकार हो जाता है? क्योंकि मृत्यु का बल पाप है। अतः रोग, शोक, दुख, चिंता, संताप और क्लेश ये सब मानो मनुष्य के पाप रूपी वृक्ष का ही फल है।

यदि पाप केवल मनुष्यों के शरीर को ही नाश कर रहा होता तो स्वर्ग को मनुष्यों के पापों का इतना बड़ा दाम क्यों चुकाना पड़ता अर्थात मसीह को मानव रूप में इस पृथ्वी पर आने और हमारे ही अपराधों के कारण उसे मार खाने की क्या जरूरत थी? (फिलि 2:6-8)।

पर भयंकर सच्चाई यह भी है कि ''पाप'' मनुष्यों की आत्मा का भी नाश कर

रहा है? पापों के कारण मनुष्य आत्मिक रूप से भी नाश हो रहे है। पाप हर एक दिन मनुष्य को नरक के निकट ले जा रहा है यानि आत्मिक दृष्टि से कहें तो समस्त मानव समाज गहरे सागर में डूबते हुए किसी जहाज पर सह यात्रा कर रहा है और सबको केवल एक ही आवश्यकता है कि हमें डूबने से कोई बचा ले।

जैसे आदम और हव्वा वह एक ऐसे इंसान थे जिन्होंने सबसे पहले जीवन में खुशी का स्वाद चखा था, पर अपने ही पापों के कारण अपने आपको मृत्यु की भंयकर समस्याओं से घिरा हुआ पाया ठीक उसी तरह से आज हर एक इंसान भी अपनी बुरी अभिलाषाओं के कारण नाना प्रकार की परीक्षाओं में फंसे हुए और अपने पापों ही के कारण मृत्यु की भयंकर समस्याओं से घिरे हुए हैं।

और मनुष्य इस दशा में तब तक रहेगा जब तक की वह अपने पापों से क्षमा प्राप्त नहीं कर ले। और इसी उद्देश्य को पूरा करने हेतु परमेश्वर ने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को इस जगत में भेजा ताकि नाश होने से हम बच जाएं? (यूहन्ना 3:16; 2 कुरि. 5:21)।

मृत्यु पर मसीह की विजयः पवित्र बाइबल हमें बताती है कि मसीह (यीशु) हमारे ही अपराधों के कारण मर गया, गाड़ा गया और तीसरे दिन मृतको में से जी भी उठा। (1 कुरि. 15:34)। और मृत्यु के उस डंक को जो पापों के डसने के कारण होता था हमेशा के लिये कुचल दिया जैसे लिखा है ''जय ने मृत्यु को निगल लिया है, हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा, मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करताहै।'' (1 कुरि. 15:54)।

इसलिये मसीह में अब जो विश्वासी है उन्हें आत्मिक मृत्यु से खौंफ खाने की कोई जरूरत नहीं है। (यूहन्ना 11:25-26)। ''पाप की मजदूरी मृत्यु'' तो है पर अब मसीह यीशु में मृत्यु दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में पाप की और मृत्यु के दण्ड की व्यवस्था से हमें स्वतंत्र कर दिया है। और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर हमारे विरोध में था मिटा कर, क्रूस से कीलों पर जड़कर हमारे सामने से हमेशा - हमेशा के लिये हटा दिया गया है। (रोमि. 8:12/कुल. 2:14)।

इसलिये अब यदि कोई इसी जीवन के रहते ही मसीह यीशु के पास आताहै तो उसे भी जयवंत जीवन से परिपूर्ण किया जाएगा।

यीशु के पास आइये, उसमें विश्वास लाईये तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लीजिये। (मरकुस 16:16. प्रेरितों 2:38 तथा गलतियों 3:27)।